18

''अधिकारी की नाईं''

बाइबल पाठ #6

IV. पहले से दूसरे फसह तक (क्रमशः)।

ज. कफरनहूम में: आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा करना (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)।

झ. कफरनहूम में: पतरस की सास और अन्य लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)।

ञ. गलील में: शिक्षा और चंगाई का यीशु का पहला दौरा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44)।

ट. गलील में: एक कोढ़ी का चंगा करना-और उसका परिणाम उत्तेजना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)।

ठ. कफरनहूम में वापस: एक झोले के मारे को चंगा करना (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)।

ड. कफरनहूम के निकट: मत्ती को बुलाहट (मत्ती 9:9; मरकुस 2:13, 14; लूका 5:27, 28)।

परिचय

इस पाठ में यीशु के कफ़रनहूम में जाने से पहले और बाद की कुछ घटनाओं के अलावा, गलील के उसके पहले दौरे के बारे में बात की गई है। इस पाठ की घटनाओं से ''गलील की महान सेवकाई'' में ''महान'' शब्द डालने में सहायता मिलती है।

इस आयत में ''अधिकारी'' शब्द मुख्य है। कफ़रनहूम के आराधनालय में यीशु की बातें सुनकर लोग ''उसके उपदेश से चकित रह गए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था'' (मरकुस 1:22)। यीशु ने वहां उपस्थित लोगों को न केवल अपनी शिक्षा से बल्कि अपने कामों से भी चकित किया। जब उसने एक आदमी से दुष्टात्मा को निकाला, तो ''सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है? कि वह *अधिकार* और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं'' (लूका 4:36)।

अधिकार के इन शानदार प्रदर्शनों के करने से यहूदी धार्मिक अगुओं के साथ यीशु का टकराव हो गया। इस पाठ में हम मसीह को अपने आलोचकों के आमने-सामने पहली बार देखते हैं। एक अधरंगी को चंगाई देने को तैयार, उसने स्पष्ट दावा किया कि ''मनुष्य के पुत्र

को [अपनी बात करते हुए] पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का *अधिकार*[1] है। (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ, अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा'' (मत्ती 9:6)। जब वह झोले का मारा हुआ उठकर चला, तो ''लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा *अधिकार* दिया है'' (मत्ती 9:8)।

कफ़रनहूम में ''अधिकारी की नाईं'' (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:21-34; लूका 4:31-41)

अधिकार के साथ शिक्षा देना (मरकुस 1:21, 22; लूका 4:31, 32)

गलील में अपनी सेवकाई आरम्भ करते ही यीशु को आराधनालयों में, जो लगभग हर नगर में थे, तैयार श्रोता मिल गए (देखें लूका 4:15)। आराधनालयों में, पवित्र शास्त्र पढ़े जाने के बाद उपासना करवाने वाला व्यक्ति[2] उस पद की व्याख्या करने के लिए वहां उपस्थित लोगों में से किसी व्यक्ति को (जो इस योग्य लगता हो) बुला सकता था।

चार मछुआरों को बुलाने के बाद वाले सब्त के दिन, यीशु और उसके चेलों ने कफ़रनहूम के आराधनालय में आराधना में भाग लिया।[3] उपयुक्त समय आने पर, मसीह को बोलने की अनुमति मिल गई। जिन्होंने उसे सुना वे ''उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था'' (मरकुस 1:22; देखें लूका 4:32)। शास्त्री लोग अपने अधिकार से बात नहीं करते थे। इसके बजाय, वे उस विषय पर बोलने वाले अनगिनत अधिकारियों के नाम गिना देते थे। द लिविंग बाइबल में ऐसे लिखा गया है, ''मण्डली चकित थी ... क्योंकि वह एक अधिकारी की तरह बोलता था, और अपनी बातों को दूसरों को उद्धृत करके उछालने की कोशिश नहीं करता था–जो उसके बिल्कुल विपरीत था, जिसे सुनने के वे आदी थे।''[4]

अधिकार से भूत निकालना (मरकुस 1:23-28; लूका 4:33-37)

आराधनालय की सभाओं में सामान्यतया एक मूल मर्यादा होती थी, परन्तु यीशु के बोलने पर शोर से शान्ति भंग हो गई:

> और उसी समय, उन की सभा के घर में एक मनुष्य था, जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी। उस ने चिल्लाकर कहा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम?[5] क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन![6] (मरकुस 1:23, 24)

लूका हमें बताता है कि वह ''अशुद्ध आत्मा'' एक दुष्टात्मा थी (4:33, 35)। ''दुष्टात्मा'' यूनानी शब्द *daimonion* का हिन्दी अनुवाद है।[7] अंग्रेज़ी में इसे ''demon'' कहा जाता है। डीमन या दुष्टात्मा शैतान की इच्छा पूरी करने के लिए उसके मातहत[8] दुष्ट अलौकिक जीव हैं। नये नियम के समयों में, दुष्टात्मा लोगों की इच्छा के विरुद्ध उनमें

प्रवेश कर सकते थे। उदारवादी विद्वान मसीह के समय में लोगों के दुष्टात्मा से ग्रस्त होने की बात से यह कहते हुए इनकार करते हैं कि अन्धविश्वासी लोगों द्वारा शारीरिक रोग को दुष्टात्माओं से जोड़ा जाता था, परन्तु वैद्य लूका ने शारीरिक रोग वाले और ''दुष्टात्माओं से ग्रस्त'' लोगों में अन्तर किया।[9] दुष्टात्माओं से ग्रस्त होने की बात से यीशु को अपनी सामर्थ और करुणा दिखाने का अतिरिक्त अवसर मिल गया। मरकुस 1 और लूका 4 अध्याय उस पहली घटना का वर्णन करते हैं, जब यीशु ने एक आदमी से दुष्टात्मा को निकाला था।

जब दुष्टात्मा ने उसे रोका, तो मसीह ने उस अशुद्ध आत्मा को डांट दिया था। दुष्टात्मा अपने मेज़बान को फर्श पर गिराकर उसके शरीर को मरोड़कर और बड़े ज़ोर से चिल्लाकर उसमें से निकल गई। अन्ततः, बेशक आत्मा ''उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल गई'' (लूका 4:35)। द लिविंग बाइबल में ''उसे कोई और हानि पहुंचाए बिना'' है।

वहां उपस्थित लोग यह देखकर हैरान रह गए, और ''उसका नाम तुरन्त गलील के आस-पास के सारे देश में हर जगह फैल गया'' (मरकुस 1:28)।[10]

अधिकार के साथ चंगा करना
(मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)

आराधनालय की सभा के बाद, यीशु और उसके चार चेले पतरस और अन्द्रियास के घर चले गए (मरकुस 1:29)।[11] वहां उन्हें पतरस की बीमार सास बिस्तर पर पड़ी मिली,[12] जिसे बहुत तेज़ बुखार चढ़ा हुआ था। यीशु ने उसे हाथ से पकड़कर उठाया और उसका बुखार उतर गया, ''और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा-टहल करने लगी'' (लूका 4:39)। द लिविंग बाइबल में है, ''उसने उठकर उनके लिए भोजन तैयार किया!''

इसके साथ ही, जो कुछ आराधनालय में हुआ था, उसकी खबर पूरे क्षेत्र में फैल गई थी। इसलिए सूरज डूबने के बाद,[13] ''जिन-जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने एक-एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया'' (लूका 4:40)। यीशु ने अशुद्ध आत्माओं को भी निकाला। ''दुष्टात्मा भी चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू परमेश्वर का पुत्र है, बहुतों में से निकल गई, परन्तु वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह है'' (लूका 4:41; देखें 4:34; मरकुस 1:24)।

किसी तरह दुष्टात्माओं को मालूम था कि वह मसीह है (देखें याकूब 2:19)। आराधनालय वाली दुष्टात्मा ने यीशु को ''परमेश्वर का पवित्र जन'' कहा था। इन दुष्टात्माओं ने उसे ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा। मैंने हाल ही में ये शब्द एक स्वैटशर्ट (गर्म टी-शर्ट) पर लिखे देखे थे: ''पांच में से पांच दुष्टात्मा यह मानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है!'' मुझे यह जानकर दुख होता है कि दुष्टात्मा यीशु को स्वर्ग से आया मानते हैं परन्तु बहुत से मनुष्य उसे परमेश्वर मानने से इनकार करते हैं।

यीशु ने अशुद्ध आत्माओं को यह बताने क्यों नहीं दिया कि वह कौन हैं। सम्भवतया

इसके कई कारण थे,[14] परन्तु शायद इसका प्रमुख कारण यह था कि वह किसी भी प्रकार से दुष्टात्माओं के साथ सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था। अन्ततः, उस पर बालजबूल[15] अर्थात शैतान की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लग गया (मत्ती 12:24)।

''अधिकारी की नाईं'' गलील में (मत्ती 4:23-25; 8:2-4; मरकुस 1:35-45; लूका 4:42-44; 5:12-16)

अधिकार और दर्शन

अगली सुबह तड़के ही यीशु प्रार्थना करने के लिए कफ़रनहूम के बाहर एक सुनसान जगह पर चला गया (मरकुस 1:35)। यद्यपि वह ईश्वरीय था, परन्तु उसे पिता के साथ अकेला रहने की आवश्यकता थी। आपकी और मेरी भी यही आवश्यकता है।

उसके चेलों ने उसे ढूंढ़कर कहा, ''सब लोग तुझे ढूंढ़ रहे हैं'' (मरकुस 1:37)। वे इस बात से रोमांचित थे कि यीशु को कफ़रनहूम में इतनी बड़ी सफलता मिल गई थी, परन्तु यीशु का दर्शन एक नगर से कहीं आगे था। उसने गलील के हर नगर में प्रचार करने की अपनी योजना की रूपरेखा बनाई थी (मरकुस 1:38)। अब तक कफ़रनहूम से आई लोगों की भीड़ ने उसे ढूंढ़ लिया था। उन्होंने उससे वहां रहने का आग्रह किया, परन्तु उसका फैसला पहले से ही हो चुका था (लूका 4:42, 43)। वह और उसके चेले गलील की अपनी पहली यात्रा पर निकल पड़े।

गलील के इलाके की अधिकतम लम्बाई लगभग त्रेसठ मील और चौड़ाई तैंतीस मील थी। इसमें कई सौ नगर और लगभग तीस लाख लोग रहते थे। यह यात्रा कई महीने तक चली होगी। इस यात्रा की सफलता पर मत्ती की संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है:

> और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता,[16] और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
>
> सारे सूरिया में उसका यश फैल गया;[17] और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं,[18] और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए; और उसने उन्हें चंगा किया। और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली (मत्ती 4:23-25)।

अधिकार और करुणा

प्रचार के लिए उस यात्रा पर हुए आश्चर्यकर्म को विस्तार से लिखा गया है, जो एक कोढ़ी को चंगा करने का था। पुराने जमाने में कोढ़ को यदि सबसे भयंकर नहीं तो सबसे भयंकर बीमारियों में से एक ज़रूर माना जाता था। ये शब्द स्पष्टतया, जिसे आज हम कोढ़ कहते हैं, उसके अलावा चमड़ी और नसों को प्रभावित करने वाली कई प्रकार की व्याधियां

थीं।[19] यह छूत का रोग था और सामान्यतया इसे असाध्य रोग माना जाता था।[20] कोढ़ियों को अपने आप को दूसरे लोगों से अलग रखने और दूर रहने के आदेश थे (लैव्यव्यवस्था 13:45, 46)।

जब यीशु जा रहा था, तो एक कोढ़ी उसके पास आया। लूका ने ध्यान दिलाया कि वह आदमी ''कोढ़ से भरा हुआ'' था (लूका 5:12)। उसकी बीमारी अन्तिम चरण में थी ज़्योंकि उसकी चमड़ी उतर चुकी थी; उसके कुछ अंग जैसे उंगलियां, पांवों की उंगलियां, उसके नाक का अगला भाग और कानों के ऊपरी भाग की चमड़ी उतर गई थी। वह कोढ़ी मसीह के सामने अपने घुटनों पर गिर गया और उससे भीख मांगने लगा, ''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है'' (मरकुस 1:40)। ''उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा; मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा। और तुरन्त उसका सारा कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया'' (आयतें 41, 42)।

हमने पहले इस बात पर ज़ोर दिया था कि यीशु ''व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ'' (गलातियों 4:4); उसने मूसा की व्यवस्था को माना और दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित किया। व्यवस्था के अनुसार चंगा होने वाले कोढ़ी के लिए धार्मिक नियम के अनुसार शुद्ध होने और याजक से जांच करवाने के लिए यरूशलेम के मन्दिर में जाना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 14:2-32)। इसलिए यीशु ने उस आदमी को आज्ञा दी, ''जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है, उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो'' (मरकुस 1:44ख)।

मसीह ने उसे चेतावनी भी दी कि ''देख, किसी से कुछ मत कहना'' (आयतें 43, 44क)। तो भी, वह उज़ेजित व्यक्ति ''बाहर जाकर इस बात का बहुत प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा'' (आयत 45क)।

जब मैं छोटा था, तो मुझे लगता था कि यीशु उलट मनोविज्ञान का इस्तेमाल कर रहा था। मैं सोचता था, ''कितना चालाक है! यीशु ने इस आदमी को किसी से न कहने के लिए कहा था और इसीलिए उसने अन्य लोगों को बताना चाहा!'' अब मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा यीशु के स्वभाव के विपरीत होगा, ज़्योंकि वह लोगों से चालबाजी से काम नहीं निकालता। मैं यह भी समझता हूं कि मसीह अपनी आज्ञा के प्रति गज़्भीर था। उसने चेलों को बताया था कि उसे दूसरे नगरों और गलील के नगरों में प्रचार करना है (मरकुस 1:38; लूका 4:43)-परन्तु चंगाई पाने वाले कोढ़ी के विज्ञापन के कारण, ''यीशु फिर खुल्लम-खुल्ला नगर में न जा सका'' (मरकुस 1:45ख)।

वह जहां भी जाता, लोग उसे ढूंढ़ते और ''चहुंओर से लोग उसके पास आते रहे'' (आयत 45ग)। उसकी पहली यात्रा सज़्पूर्ण और पूरी तरह सफल थी।

''अधिकारी की नाईं'' कफ़रनहूम में वापस (मत्ती 9:2-9; मरकुस 2:1-14; लूका 5:17-28)

पाप क्षमा करने का अधिकार

दौरे के अन्त में, यीशु कफ़रनहूम में आराम करने के लिए सम्भवतया पतरस के घर लौट आया। परन्तु इस दौरान वह अधिक आराम नहीं कर पाया, क्योंकि तुरन्त ही यह खबर फैल गई कि वह नगर में वापस आया है। जिस घर में वह ठहरा हुआ था, शीघ्र ही लोगों से भर गया।

वहां आने वाले लोगों में फरीसी और शास्त्री थे (मत्ती 9:3; मरकुस 2:6; लूका 5:17, 21)। ये लोग व्यवस्था के स्वयंभू संरक्षक तथा परम्पराओं के रखवाले थे।

इनमें से कई तो यरूशलेम से आए थे (लूका 5:17)। याजक और लेवी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की प्रसिद्धि बढ़ने पर उससे पूछताछ करने के लिए यरूशलेम से आए थे (यूहन्ना 1:19)। परन्तु अब यीशु को परखने के लिए फरीसी और शास्त्री आ गए।

जब यीशु प्रचार कर रहा था, तो चार लोगों ने छत उधेड़कर झोले के मारे अपने एक मित्र को बीच में से उतार दिया। यीशु को उस आदमी पर तरस आया और उसने उससे कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए'' (मरकुस 2:5)।

यीशु के आलोचक स्तब्ध रह गए। उन्हें लगा कि ''यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?'' (आयत 7)। ''परमेश्वर की निन्दा'' का अर्थ ''परमेश्वर के विरुद्ध बोलना'' है। इसका इस्तेमाल अक्सर किसी की निन्दा करने वाले के लिए किया जाता है। (तीतुस 3:2 और 2 पतरस 2:2 में इसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया गया है।) यहूदी भी परमेश्वर के स्वभाव को प्रभावित करने वाली किसी भाषा के इसी शब्द का इस्तेमाल करते थे। शास्त्रियों और फरीसियों के तर्क इस प्रकार थे:

1. केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है।
2. यह मनुष्य परमेश्वर नहीं है।
3. इसलिए, यह परमेश्वर की निन्दा का दोषी है।

उनके तर्क में कोई बुराई नहीं थी; एक ही समस्या थी कि उनका दूसरा तर्क गलत था।

> यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उन से कहा, तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा)। मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर

चला जा (आयतें 8-11)।

स्पष्ट कहें तो यीशु यह सिद्ध करने के लिए कि उसे पाप पर भी अधिकार था, बीमारी पर अपने अधिकार का इस्तेमाल कर रहा था।

जब मसीह ने उस अधरंगी को उठने के लिए कहा, तो ''वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के साज़्हने से निकलकर चला गया, इस पर सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा'' (आयत 12)।

यरूशलेम से आने वालों का तर्क यह होना *चाहिए* था:

1. केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है।
2. यह मनुष्य पाप क्षमा कर *सकता* है।
3. इसलिए वह परमेश्वर *है*!

दुर्भाग्य से, वे पूर्वधारणा, द्वेष और लोभ से इतना भरे हुए थे कि उन्होंने यीशु के दावों पर विचार ही नहीं किया।

यह उस विरोध का आरज़्भ था, जो क्रूसारोहण के समय यीशु को झेलना पड़ा था। इसके बाद से जासूस उसमें कोई न कोई कमी ढूंढ़ने की कोशिश में, जिसे वे उसके नाश के लिए इस्तेमाल कर सकें, हर समय उसके पीछे लगे रहते थे।

लोगों को चुनौती देने का अधिकार

अपने आलोचकों को नाराज़ करने के लिए यीशु ने कई काम किए थे: उसने एक अशुद्ध कोढ़ी को छुआ था। उसने यह संकेत दिया था कि वह पाप क्षमा कर सकता है। हमारे पाठ की एक और घटना है, जिससे उनका क्रोध भड़क गया था: उसने अपना एक चेला बनाने के लिए एक महसूल लेने वाले को बुला लिया था।

कफ़रनहूम के इलाके में मसीह की पसन्दीदा जगहों में से एक समुद्र तट था। जब वह वहां दोबारा गया, तो लोगों की भीड़ उसके पीछे हो ली और उसने उन्हें शिक्षा दी (मरकुस 2:13)।

उसके पास ही महसूल लेने वाले की चुंगी की चौकी थी।[21] यह चौकी सामान पर चुंगी इकट्ठी करने के लिए और यहां से पार जाने वाले लोगों से कर लेने के लिए नदी के किनारे पर लगाई गई होगी, या यह कफ़रनहूम में आने वाले सामान पर कर इकट्ठा करने के लिए पास की किसी सड़क पर[22] हो सकती है। चुंगी लेने वाले का नाम मत्ती था (मत्ती 9:9)। वह हल्फई का पुत्र था, जिसे लेवी के रूप में भी जाना जाता था (मरकुस 2:14)।

सामान्यतया चुंगी लेने वालों से यहूदी लोग घृणा करते थे। मुट्ठी भर यहूदियों को जो रोमियों के साथ सहयोग करते थे, देशद्रोही माना जाता था। रॉबर्ट एल. थॉमस ने लिखा है:

> कर इकट्ठा करने वाले लोग जैसे कि मत्ती ... मार्ग में व्यापारियों के सामान का

> अनुमान लगा कर उस पर रोमी सरकार की ओर से टैज़्स लगाते थे। ... कर की अस्पष्ट दरों से कर इकट्ठा करने वाले अपने निजी लाभ को बढ़ाने के लिए कर की राशि भी बढ़ा देते थे। मज़ी भी इस व्यवसाय के अधिकतर बेईमान लोगों में से एक था या नहीं इसका पता नहीं है, परन्तु यहूदियों द्वारा उससे घृणा करने का यही कारण काफ़ी था कि वह इन लोगों में से था।[23]

यीशु सज़्भवतया गलील सागर से आने जाने के समय अज़्सर मज़ी की चौकी के पास से गुज़रता होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपनी चौकी पर बैठे चुंगी लेने वाले को प्रचार करते मसीह को सुनने के कई अवसर मिले होंगे।[24] परन्तु, यह दिन अलग ही था, ज़्योंकि यीशु ने उसके पास रुककर उससे कहा, ''मेरे पीछे हो ले'' (मरकुस 2:14)। पतरस, अन्द्रियास, याकूब, और यूहन्ना को बुलाहट की तरह ही यह भी पूर्णकालिक चेला बनने की बुलाहट थी। उन मछुआरों की तरह, मज़ी भी ''सब कुछ छोड़कर उठा और उसके पीछे हो लिया'' (लूका 5:28)।[25]

सारांश

महान गलीली सेवकाई ज़ोर पकड़ती जा रही थी। अगले पाठ में हम इस सेवकाई पर अध्ययन करेंगे। हम यीशु और धार्मिक अगुओं के बीच झगड़ा बढ़ने और विरोध पैदा होने को देखेंगे, यही अन्ततः मसीह की मृत्यु का कारण बना।

इस पाठ में यीशु के अधिकार पर ज़ोर दिया गया है। उसकी सेवकाई के आरज़्भ से अन्त तक यहूदियों के साथ उसके झगड़े का मुज़्य मुद्दा उसके अधिकार का प्रश्न ही था। जब उसने पहली बार मन्दिर से धन का लेन-देन करने वालों को निकाला था, तो उन्होंने उससे पूछा कि वह वे काम किस अधिकार से करता है (यूहन्ना 2:18)। पृथ्वी पर उसके जीवन के अन्तिम सप्ताह में उन्होंने उसे चुनौती दी, कि ''हमें बता, तू इन कामों को किस अधिकार से करता है, और वह कौन है, जिस ने तुझे यह अधिकार दिया?'' (लूका 20:2)।

अधिकार का प्रश्न उसे आपके उज़र के लिए भी है। उसने कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मज़ी 28:18)। ज़्या आप अपने जीवन में उसके अधिकार को मानने के लिए तैयार हैं? उसके अधिकार के सामने झुकने के लिए केवल होंठों से बोलना ही काफ़ी नहीं है; इसके लिए उसकी आज्ञा मानना भी आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मज़ी 7:21)। ज़्या आप उसके अधिकार को मानने को तैयार हैं-आज ही?[26]

टिप्पणियां

[1]KJV में ''power'' है, परन्तु यह मरकुस 1:22, 27 में KJV में ''authority'' वाला शब्द ही है, जिसका अर्थ अधिकार है। [2]इंचार्ज को आराधनालय का ''सरदार'' कहा जाता था (मरकुस 5:36, 38; लूका 8:41; 13:14)। KJV में ''आराधनालय का हाकिम'' वाक्यांश इस्तेमाल किया गया है। [3]पहली सदी के कफ़रनहूम के आराधनालयों के खण्डहर आज भी देखे जा सकते हैं। [4]अपने अध्ययन में आगे हम यीशु को ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था ... ; परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं ...'' ऐलान करते सुनेंगे (मत्ती 5:27, 28)। [5]मूल शास्त्र में, ''नासरी'' (नासरत का) अनुवादित शब्द मूलत: ''नाज़रीन'' है। [6]''पवित्र जन'' प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा का एक पदनाम था (भजन संहिता 16:10; प्रेरितों 2:27)। [7]KJV में *daimonion* का अनुवाद ''devils'' किया गया है, जो उलझाने वाला है क्योंकि डेविल (*diabolos*) अर्थात शैतान तो एक ही है। [8]मत्ती 12:22-29 में, शैतान को ''दुष्टात्माओं का सरदार'' कहा गया है। [9]यह भिन्नता हम आगे इस पाठ में देखेंगे। सुसमाचार के वृत्तांतों के अन्य लेखकों ने यही भिन्नता बताई है। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है, ''दुष्टात्मा को निकालने की प्रत्येक घटना में इस्तेमाल की गई भाषा के साथ हिंसा किए बिना दुष्टात्मा से ग्रस्त होने को एक बीमारी ही मानना सम्भव नहीं होगा'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे और फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 167)। [10]ध्यान दें कि सब्त के दिन चंगाई देने के लिए यीशु की आलोचना स्थानीय धार्मिक अधिकारियों ने नहीं की। यह आलोचना यरूशलेम से आए प्रतिनिधियों ने शुरू की।

[11]मत्ती और लूका इसे केवल शमौन पतरस का घर कहते हैं (देखें मत्ती 8:14; लूका 4:38)। ध्यान दें कि पहले बैतसैदा को ''अन्द्रियास और पतरस का नगर'' कहा गया था (यूहन्ना 1:44)। या तो वे कफ़रनहूम में रहने लगे थे, या बैतसैदा कफ़रनहूम के काफ़ी निकट था और इसे एक उपनगर के रूप में जाना जाता था। [12]मनुष्यों की शिक्षा के उलट जो पतरस को ''पहला पोप'' मानते हैं, उसकी शादी हुए कई साल बीत गए थे (1 कुरिन्थियों 9:5)। [13]लोगों ने सूरज डूबने तक इन्तज़ार किया होगा। क्योंकि सूरज डूबने पर सब्त खत्म होता था और वे सब्त के दिन कोई बोझ उठाने के निषेध या मनाही का उल्लंघन नहीं करना चाहते थे (देखें यिर्मयाह 17:22)। [14]उदाहरण के लिए, इन कारणों पर विचार करें: (1) खुलकर यह ऐलान करना कि वह मसीह है बहुत जल्दबाज़ी वाली बात थी, और (2) दुष्ट शक्तियों के लिए इस बात के मुख्य गवाह होना कि वह कौन था, उपयुक्त नहीं था। [15]इसे दूसरी तरह से भी पढ़ा जाता है, जैसे ''बालज़बूब'' [16]लूका 4:44 कहता है, ''वह *यहूदिया* के आराधनालयों में प्रचार करता रहा।'' इस आयत में ''यहूदिया'' स्पष्टतया यहूदिया के राज्य के लिए नहीं, बल्कि पूरे पलिश्तीन देश के लिए है। NASB बाइबल वाली मेरी प्रति में, ''यहूदिया'' को ''यहूदियों का देश (गलील समेत) कहा गया है; कुछ हस्तलेखों में *गलील* पढ़ें।'' [17]सूरिया या सीरिया गलील के उत्तर में था। (''इस पुस्तक में मसीह की वर्णित यात्राएं'' पर मानचित्र देखें।) स्पष्टतया, गलील से आने वालों ने ही सूरिया में खबर फैलाई। [18]ध्यान दें कि मत्ती ''दुष्टात्माओं से जकड़े'' होने और ''बीमारियों'' में अन्तर करता है। [19]कुछ लक्षण उन लक्षणों से मेल नहीं खाते थे, जिन्हें आज कोढ़ (''कुष्ट रोग'') के लक्षण कहा जाता है। (बाइबल के समयों में घरों में भी, कोढ़ हो सकता था; देखें लैव्यव्यवस्था 14:34, 35।) बाइबल के समयों में कोढ़ के नाम से जानी जाने वाली मुख्य दो बीमारियों पर चर्चा मैक्गर्वे और पैंडलटन, 176-78 में मिलती है। [20]यह तथ्य कि कोढ़ियों के शुद्ध होने सम्बन्धी नियम थे, यह सुझाव देता है कि हर प्रकार ''कोढ़'' लाइलाज नहीं था-परन्तु हम यह कहें कि कोढ़ को लाइलाज माना जाता था तो अधिक सही होगा।

[21]मूल भाषा के शब्द का अर्थ ''कर लेने वाला'' है। NASB में ''कर इकट्ठा करने वाला'' है। KJV में, ''publican'' है, जो कुछ देशों के लिए उलझाने वाला हो सकता है, जहां ''पब्लिकन'' उसे कहते हैं जो ''pub'' (अहाता जहां शराब बेची जाती है) चलाता है। [22]हमने पहले एक जगह कहा था कि कफ़रनहूम पलिश्तीन के बीच में से जाने वाले प्रमुख पूर्व-पश्चिम राजमार्ग से अधिक दूर नहीं था। [23]रॉबर्ट एल थॉमस, सं., एण्ड स्टैनली एन. गंड्री, सह. संस्क., *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (शिकागो: मूडी प्रैस,

1978) 55. [24]यीशु और मत्ती के सम्बन्ध की पृष्ठभूमि नहीं दी गई, परन्तु पूर्णकालिक चेला बनने की प्रतिबद्धता के लिए जानकारी प्राप्त करके निर्णय लेना आवश्यक है। [25]समझें कि मत्ती को अपने निर्णय की क्या कीमत चुकानी पड़ी। अपने जाल छोड़कर यीशु के पीछे हो लेने वाले मछुआरे तो मछलियां पकड़ने के लिए वापस जा सकते थे (देखें यूहन्ना 21:3); परन्तु अपने रोमी ''नियोक्ताओं'' से पीछे हटकर मत्ती चुंगी इकट्ठी करने के लिए वापस नहीं जा सकता था। कई एकरूपकों में मत्ती द्वारा बताए गए पर्व को उसके बुलाए जाने के तुरन्त बाद बताया जाता है (मत्ती 9:10-13; मरकुस 2:15-17; लूका 5:29-32), और यह बात यहां ठीक भी लगती है। आप इसे अपने अध्ययन में यहां पर शामिल कर सकते हैं। [26]यद्यपि यह कोई प्रवचन नहीं है, परन्तु बाहर के पापियों (जो कभी मसीह में नहीं आए हैं) और अविश्वासी मसीहियों के लिए उद्धार की शर्तों में इसे शामिल करना चाहें तो कर सकते हैं। इस पुस्तक में ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा'' और ''चेले बनने का मूल्य'' पाठों में मसीही बनने के ढंग पर ज़ोर दिया गया है। अविश्वासी मसीहियों के वापस आने पर प्रेरितों 8:22 और याकूब 5:16 के हवाले शामिल किए जा सकते हैं।